दिनांक : .२.२०२०

प्रति,
मा. केंद्रीय सांस्कृतिक मंत्री,
भारत सरकार, नई देहली.

विषय : वर्ष १९९० में कश्मीरी हिन्दुओं पर हुए क्रूर अत्याचारों के संदर्भ में समाज को भ्रमित करनेवाली फिल्म 'शिकारा' का प्रमाणपत्र निरस्त कर सेन्सर बोर्ड इस फिल्म पर प्रतिबंध लगाए !

महोदय,

७ फरवरी २०२० को 'विनोद चोपडा फिल्म' द्वारा निर्मित हिन्दी चित्रपट 'शिकारा' प्रदर्शित हुआ । यह चित्रपट कश्मीरी हिन्दुओं के जीवन पर आधारित है, ऐसा चित्रपट के 'ट्रेलर' के माध्यम से बताया गया था । पिछले ३० वर्षों से अत्याचार पीडित कश्मीरी हिन्दुओं के संदर्भ में सरकार, बुद्धिवादी, तथाकथित धर्मनिरपेक्षतावादी इत्यादि कोई भी आजतक नहीं बोला । पहली झलक में लगा था किइस चित्रपट के माध्यम से पहली बार कोई कश्मीरी हिन्दुओं पर होनेवाले अत्याचारों की ओर ध्यान दे रहा है । परंतु प्रत्यक्ष में 'शिकारा' चित्रपट प्रदर्शित होने पर कश्मीरी हिन्दुओं को लगा कि उनके घाव पर औषधि लगाने के स्थान पर ३० वर्ष पुराने घावों को खोदकर पुन: एक बार उसपर नमक छिडका गया है । एक बार यह समझा जा सकता है कि कश्मीरी हिन्दुओं पर हुए अत्याचारों को देख प्रत्येक व्यक्ति द्रवित नहीं होगा; परंतु उनपर हुआ भयंकर अन्याय 'हुआ ही नहीं' इस प्रकार से चित्रपट में दिखाना, एक प्रकार से कश्मीरी हिन्दुओं पर मानसिक अत्याचार करना है ।

बॉलिवुड चित्रपट जगत वैसे हिन्दुओं की भावनाओं के संदर्भ में संवेदनशील नहीं है, यह सर्वज्ञात है । इससे पूर्व भी अनेक चित्रपटों की पटकथाएं, संवाद, पात्र, गाने इत्यादि में इतिहास को तोड-मरोड कर दिखाना; हिन्दू देवताओं की खिल्ली उडाना; अन्य धर्मीयों को सहिष्णु और हिन्दुओं को असहिष्णुदिखाना; ऐतिहासिक मुसलमान अथवा ईसाई आक्रमणकारियों का सच्चा इतिहास न दिखाकर, उनका महिमामंडन करना इत्यादि अनेक घटनाएं इससे पूर्व भी चित्रपट जगत में हुई हैं । चित्रपट प्रदर्शित होने से पूर्व विवाद उत्पन्न हों, ऐसा विज्ञापन कर अथवा विवादित कथानक लेकर चित्रपट की प्रसिद्धी करने का प्रयास करना, ऐसे ओछे प्रयास भी चित्रपट निर्मार्ताओं द्वारा किए जाते हैं, यह भी अबतक अनेक बार समाज देख चुका है । हाल ही में प्रदर्शित चित्रपट 'शिकारा' इससे भी आगे जाकर कश्मीरी हिन्दू समाज का हुआ वंशविच्छेद, कश्मीरी हिन्दुओं की हुई क्रूर हत्या, हजारों कश्मीरी हिन्दू माता-बहनों पर हुए बलात्कार, हजारों मंदिरों का विध्वंस और लाखों कश्मीरी हिन्दुओं का विस्थापन, यह सर्व भयंकर इतिहास दबाने का अश्लाघ्य प्रयास निर्माता विधु विनोद चोपडा ने किया है । इस गलती को भारतीय समाज कभी भी क्षमा नहीं करेगा ।

इस फिल्म का प्रमोशन करते समय प्रत्येक पोस्टर पर 'शिकारा – द अनटोल्ड स्टोरी ऑफ काश्मिरी पंडितस्', ऐसा दिया जा रहा था; परंतु फिल्म प्रदर्शित होने के दिन उसका विज्ञापन करते समय उसके सबटाईटल को बदलकर 'शिकारा – अ टाइमलेस लव स्टोरी इन द वर्स्ट ऑफ टाइम', ऐसा कर दिया गया ।

*** 'शिकारा' चित्रपट में वास्तविकता छिपाकर असत्य कैसे दिखाया है, इसके कुछ उदाहरण आगे दे रहे हैं ।**

१. फिल्म का दृश्य : कश्मीरी हिन्दू स्त्रियों पर बलात्कार हुआ ही नहीं !

वास्तविकता : सहस्रों हिन्दू स्त्रियों पर बलात्कार हुए हैं !

२. फिल्म का दृश्य : हाथ की उंगलियों पर गिने जानेवाले कश्मीरी हिन्दू ही यहां मारे गए !

वास्तविकता : ९०,००० से अधिक कश्मीरी हिन्दुओं की हत्या की गई है !

३. फिल्म का दृश्य : एक भी मंदिर धर्मांध मुसलमानों ने नहीं तोडा है, ऐसा बताया गया !

वास्तविकता : सहस्रों हिन्दू मंदिर तोडे गए, मूर्तिभंजन किया गया । आज भी ऐसी भग्न मूर्तियां और सूने पडे अनेक मंदिर देखने को मिलते हैं !

४. फिल्म का दृश्य : तत्कालीन भारत सरकार ने कश्मीर में 'धारा 144' लागू की, जिससे वहां के मुसलमान मारे गए और इसीलिए मुसलमानों के बच्चे आतंकवादी बने, ऐसा असत्य दिखाया गया है !

वास्तविकता : जिहादी मानसिकता का मूल कारण न बताकर, सरकार ने मुसलमानों को मारा, ऐसा दिखाकर भारत सरकार को बदनाम करने का प्रयास किया है ।

५. फिल्म का दृश्य : धर्मांध मुसलमानों ने कश्मीर छोडकर सुरक्षित भारत जाने में कश्मीरी हिन्दुओं की बहुत सहायता की !

वास्तविकता : प्रत्यक्ष में कश्मीरी मुसलमानों ने मस्जिदों से बांग देकर, समाचारपत्रों में विज्ञापन छपवाकर, हिन्दुओं के घरों पर भित्तीपत्रक लगाकर 'मुसलमान बनो, चले जाओ अथवा मरने के लिए तैयार रहो' ऐसी धमकियां कश्मीरी हिन्दुओं को दी थी!

६. फिल्म का दृश्य : कश्मीरी हिन्दुओं के मन में कश्मीरी मुसलमान मित्रों के बारे में बहुत प्रेम था और है !

वास्तविकता : ऐसा होता तो पिछले ३० वर्षों में इन मुसलमानों ने कश्मीरी हिन्दुओं को पुन: लाने के लिए क्या प्रयास किए ? मूलत: कश्मीरी हिन्दुओं को निकाला ही क्यों गया ? इस मूल प्रश्न के बारे में विधु विनोद चोपडा ने चित्रपट में कुछ भी क्यों नहीं दिखाया ?

७. फिल्म का दृश्य : कश्मीरी हिन्दुओं की हत्या करने के विषय में धर्मांध मुसलमानों को अत्यंत दु:ख हुआ । इसलिए वे मरते समय उस विषय में कश्मीरी हिन्दुओं से क्षमा भी मांगते हैं !

वास्तविकता : दो माह के बच्चों को और गर्भवती हिन्दू महिलाओं को भी जिन नराधम मुसलमानों ने नहीं छोडा, उनके बारे में ऐसा दिखाकर चोपडा को किसकी दाढी सहलानी है ?)

८. फिल्म से फैलाया गया भ्रम : भारत से मिलनेवाले सौतेले व्यवहार के कारण 'रणजी' क्रिकेट खेलनेवाला एक खिलाडी आतंकवादी बन जाता है !

वास्तविकता : आजतक साढेचार लाख हिन्दुओं को पलायन हेतु विवश करने पर भी, घरबार लुट जाने पर भी, उनमें से कितने कश्मीरी हिन्दू आतंकवादी बने हैं, इसका उत्तर भी चोपडा से लेना होगा !)

९. फिल्म का दृश्य : कश्मीरी मुसलमान अपना घर बनाने के लिए रखे पत्थर कश्मीरी हिन्दुओं के घर बनाने के लिए नि:शुल्क देते हैं । इतने कश्मीरी मुसलमान दानवीर हैं !

वास्तविकता : जिहादी मुसलमानों ने कश्मीरी हिन्दुओं के घरों को उजाड दिया । ऐसे मुसलमान हिन्दुओं को घर बनाने हेतु पत्थर देकर उनकी सहायता करते हैं, यह उनके अपराधों को छिपाने का ही एक प्रयास है ।

१०. **फिल्म का दृश्य :** कश्मीरी हिन्दू उनपर आए संकट दूर करने के लिए भारत सरकार से कभी नहीं कहते, इसके विपरीत २५०० से अधिक पत्र अमेरिका के राष्ट्राध्यक्ष को लिखते हैं ! अर्थात कश्मीरी हिन्दू भारत को अपनी मातृभूमि नहीं मानते !

वास्तविकता : यदि यह सत्य है, तो यह तत्कालीन मुख्यमंत्री फारुख अब्दुल्ला (नेशनल कॉन्फ्रेन्स पार्टी) और तत्कालीन प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह (कांग्रेस पार्टी) इन दोनों नेताओं द्वारा कश्मीरी हिन्दुओं की उपेक्षा करने का ही परिणाम है । उसके लिए कश्मीरी हिन्दुओं को दोष देने का चोपडा का प्रयास निषेधार्ह ही है !)

११. **फिल्म का दृश्य :** निर्वासित कश्मीरी हिन्दुओं के तंबू में छोटे बच्चे 'मंदिर वहीं बनाएंगे' यह नारे लगाते हैं । तब 'लीडर जोडने का काम करते हैं, तोडने का नहीं !' ऐसी समझाइश इन बच्चों को देनी पडती है ।

वास्तविकता : 'पाकिस्तान जिंदाबाद' और 'भारत तेरे टुकडे होंगे' ऐसे नारे लगानेवाले कश्मीरी मुसलमानों की सत्य घटना न दिखाना, अपितु राम मंदिर के संदर्भ में कपोलकल्पित घटना दिखाना, ऐसा कर हिन्दुओं को असहिष्णु दर्शानेवाले चोपडा का जितना भी निषेध किया जाए कम ही है !

१२. फिल्म का दृश्य : अपने जीवनभर की पूंजी जमा कर बडे प्रेम से बनाया घर, कश्मीर का मुसलमान हथिया लेता है । मुसलमान हिन्दू को घर बेचने की सलाह देता है । तब उस हिन्दू की पत्नी कहती है, 'हम लौटकर आएंगे ही । हमारी अस्थियां भी यहीं विसर्जित होंगी; पर हम घर नहीं बेचेंगे ।' उस कश्मीरी हिन्दू स्त्री को जानलेवा रोग होता है और किसी भी परिस्थिति में घर न बेचनेवाला हिन्दू औषधोपचार के नाम पर पंचतारांकित होटल में अपने पत्नी-बच्चों के साथ रहने के लिए घर एक मुसलमान को बेच देता है । अंत में वह स्त्री प्राण त्याग देती है और वह हिन्दू अपनी पत्नी की अस्थियां लेकर कश्मीर में अपने बेचे हुए घर आता है !

इससे निर्देशक को यह संदेश देना है (?) : कश्मीरी हिन्दू आगे भी कश्मीर में नहीं जा सकेगा और जाना ही हो, तो उनकी अस्थियां ही वहां जाएंगी, यही धमकी भरा संदेश चोपडा को इस चित्रपट के माध्यम से कश्मीरी हिन्दुओं को देना है, ऐसा संदेह होता है !

उपर्युक्त प्रसंग चित्रपट में दिखाकर विधु विनोद चोपडा ने कश्मीरी हिन्दुओं पर हुए अत्याचारों की खिल्ली ही उडाई है । जो कश्मीरी हिन्दू स्वार्थ के लिए, अर्थात घर-पैसा-जमीन-पत्नी को बचाने के लिए धर्म बदलकर मुसलमान बन सकते थे; परंतु अपना धर्म बचाने के लिए सर्वस्व छोडकर कश्मीर छोड आए । उनका रक्तरंजित इतिहास न दिखाकर, मुसलमानों का भाईचारा, भारत के विषय में द्वेष और कश्मीरी हिन्दुओं को पुन: कश्मर में लौटने की आशा न दिखाना, ऐसी अत्यंत अयोग्य भूमिका से चित्रपट बनाया है । किसी भी इतिहास को तोडना-मरोडना, एक प्रकार से अपराध ही है । विधु विनोद चोपडा ने वह किया है । धर्मनिरपेक्ष भारत में धर्म के नाम पर लाखो हिन्दुओं को विस्थापित होना पडा है, वह वास्तविकता बताना तो दूर, उसका विपरीत दिखाया गया है । यह अतिशय वेदनादायी है । अभी तक कश्मीरी हिन्दू निर्वासितों का जीवन जी रहे हैं, अभी तक लाखो हिन्दू निर्वासितों की छावनियों में न्याय की प्रतिक्षा में हैं । ऐसा होते हुए उनपर इस प्रकार चित्रपट के माध्यम से अयोग्य इतिहास दिखाकर पुन: एकबार किया अत्याचार अक्षम्य है ।

विधु विनोद चोपडा ने इससे पूर्व भी 'पीके' चित्रपट से हिन्दू देवी-देवताओं का अनादर कर अनेक धार्मिक बातों पर टीका की थी । यह करते हुए जानबूझकर अन्य धर्मियों की श्रद्धा और प्रथा-परंपरा के बारे में बात करना टाला था । 'संजू' नामक चित्रपट से उन्होंने एक कुख्यात अभिनेता का महिमामंडन कर समाज को अनुचित संदेश देने का प्रयास किया । चित्रपट का माध्यम समाज को बहुत प्रभावित करता है । इसलिए चित्रपटों में अनुचित संदेश, अनुचित इतिहास दिखाने पर उसका परिणाम आनेवाली कुछ पीढियों पर वैसा ही रहता है । अनुचित अथवा समाजविघातक बातें इस प्रकार प्रदर्शित

करना गंभीर अपराध है । इसके लिए समाज, राष्ट्र और धर्म कभी भी क्षमा नहीं करेगा । इसका विधु विनोद चोपडा को बोध होना ही चाहिए ! इसलिए **सेन्सर बोर्ड त्वरित इस चित्रपट को दिया प्रमाणपत्र निरस्त करे और इस चित्रपट पर प्रतिबंध लगाए । केंद्र सरकार भी इस चित्रपट में दिखाए गए अयोग्य चित्रण के विषय में निर्माताओं पर कार्यवाही करे, ऐसी हमारी मांग है ।**

आपका नम्र,

संपर्क :

प्रत :

१. मा. केंद्रीय गृहमंत्री, भारत सरकार, नई देहली.

२

.

म

ा

.

अ

ध्

य

क्ष

,

स

ं

न

स

ा

ज

र

ब

ा

ड